eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

COVID-19 और औद्योगिक श्रमिकों की आय : एक रणनीतिक एवं गहन विश्लेषण

मनोज सिंह यादव[1]
डॉ0 अंशुमान शर्मा[2]
[1]शोध छात्र स्ना0 अध्ययन एवं शोध केंद्र वाणिज्य संकाय श्री कृष्णा विश्वविद्यालय छतरपुर म0प्र0
[2]शोध पर्यवेक्षक वाणिज्य संकाय श्री कृष्णा विश्वविद्यालय छतरपुर म0प्र0

Received: 15 May 2025 Accepted & Reviewed: 25 May 2025, Published: 31 May 2025

Abstract

कोविड–19 महामारी ने वैश्विक स्तर पर आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं को प्रभावित किया है, जिसमें भारत का औद्योगिक क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा।संगठित क्षेत्रों में कार्यरत श्रमिकों को इस संकट का तीव्र प्रभाव झेलना पड़ा। महामारी के दौरान लॉकडाउन, उत्पादन में रुकावट, और रोजगार में अनिश्चितता ने श्रमिकों की जीवन–शैली और आर्थिक सुरक्षा को चुनौती दी।यह अध्ययन झाँसी क्षेत्र के औद्योगिक श्रमिकों की परिस्थितियों का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य से मूल्यांकन करता है। शोध का उद्देश्य यह जानना है कि कोविड–19 के पश्चात उनकी आय, वेतन संरचना एवं रोजगार की स्थिरता में किस प्रकार के परिवर्तन संभावित हैं। साथ ही, यह अध्ययन पुरुष एवं महिला श्रमिकों की स्थिति की तुलनात्मक समीक्षा भी करता है, जिससे लिंग आधारित आर्थिक असमानताओं की पहचान की जा सके। यह शोध नीति–निर्माताओं को श्रमिकों की सामाजिक सुरक्षा, न्यूनतम वेतन गारंटी एवं आपदा–कालीन राहत उपायों के पुनर्विचार हेतु एक दिशा प्रदान करने का प्रयास करता है।कोविड–19 महामारी ने झाँसी क्षेत्र के औद्योगिक श्रमिकों की आय और आर्थिक स्थिरता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है।विश्लेषण में पुरुषों ने वेतन संरचना और नियमितता में अधिक सकारात्मक प्रतिक्रिया दी, जबकि महिलाओं ने अधिक नकारात्मक प्रभाव की सूचना दी। यह अध्ययन लैंगिक संवेदनशील नीतियों, कौशल विकास, और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की आवश्यकता को रेखांकित करता है ताकि श्रमिकों की आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित की जा सके।

मुख्य शब्द : कोविड–19, औद्योगिक श्रमिक, आय परिवर्तन, वेतन संरचना, काई–वर्ग परीक्षण, लैंगिक असमानता

Introduction

कोविड–19 महामारी ने पूरी दुनिया में औद्योगिक श्रमिकों पर गहरा प्रभाव डाला है, विशेष रूप से भारत में जहाँ लाखों श्रमिकों की रोजी–रोटी और सुरक्षा पर संकट आ गया। उद्योगों को बंद होना पड़ा, श्रमिकों को अपने घर वापस लौटना पड़ा, और आपूर्ति श्रृंखला में बड़े पैमाने पर व्यवधान पैदा हुआ। इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है ताकि यह समझा जा सके कि महामारी के बाद औद्योगिक श्रमिकों की स्थिति क्या है और भविष्य में उन्हें किस प्रकार की सहायता की आवश्यकता होगी। महामारी के दौरान और उसके बाद औद्योगिक श्रमिकों की आय पर गहरा असर पड़ा। कई श्रमिक अपनी नौकरी खो बैठे, जबकि अन्य को वेतन कटौती या भुगतान में देरी का सामना करना पड़ा। इस तरह के आय परिवर्तन को समझना महत्वपूर्ण है, ताकि यह जाना जा सके कि श्रमिक वित्तीय रूप से कितने सुरक्षित है और किस हद तक उनकी आर्थिक स्थिति प्रभावित हुई है। आय पर इस प्रभाव का अध्ययन इस दिशा में भी मदद करेगा कि भविष्य में किस प्रकार की नीतियों और योजनाओं की आवश्यकता हो सकती है। COVID–19 महामारी ने भारतीय उद्योगों में विशेषकर असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

पर गहरा प्रभाव डाला है। 'योजना' पत्रिका (2021) के अनुसार, लॉकडाउन के दौरान काम की अनिश्चितता और आय में कटौती आम समस्या रही। 'टाइम्स ऑफ इंडिया' (2020) ने रिपोर्ट किया कि उत्तर प्रदेश में हजारों श्रमिक बेरोजगार हो गए। बिजनेस टुडे (2021) ने बताया कि MSME सेक्टर के ठप होने से श्रमिकों की वेतन संरचना चरमरा गई। 'ग्लोबल टाइम्स' (2021) के अनुसार, महामारी ने श्रमिकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को अस्थिर कर दिया। औद्योगिक क्षेत्र में कार्यरत लोगों की आय, लाभ और भविष्य की योजनाओं में व्यवधान उत्पन्न हुआ।

साहित्य पुनर्वलोकन

गुप्ता, आर., और किशोर, ए. (2021). यह अध्ययन भारत के अनौपचारिक औद्योगिक श्रमिकों पर कोविड–19 के आर्थिक प्रभावों की पड़ताल करता है। शोधकर्ताओं ने पाया कि लॉकडाउन के कारण विनिर्माण क्षेत्र में उत्पादन में कमी और आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान ने श्रमिकों की आय को गंभीर रूप से प्रभावित किया। लगभग 60% श्रमिकों ने आय में 30–50% की कमी की सूचना दी, विशेष रूप से अनौपचारिक क्षेत्र में। अध्ययन में यह भी उल्लेख किया गया कि अनियमित वेतन भुगतान और रोजगार अनिश्चितता ने श्रमिकों की आर्थिक स्थिरता को और कमजोर किया। यह शोध नीतिगत हस्तक्षेपों की आवश्यकता पर बल देता है, जैसे न्यूनतम वेतन गारंटी और सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ। **सेंगुप्ता**, ए. (2023) का अध्ययन शहरी भारत में औद्योगिक श्रमिकों की आय और रोजगार पर कोविड–19 के दीर्घकालिक प्रभावों का विश्लेषण करता है। शोध में पाया गया कि 2020–2022 के बीच, विनिर्माण क्षेत्र में 40% श्रमिकों ने अस्थायी या स्थायी नौकरी छूटने की सूचना दी, जिसके परिणामस्वरूप औसत आय में 25% की कमी आई। अध्ययन ने यह भी नोट किया कि महिलाएँ और कम कुशल श्रमिक अधिक प्रभावित हुए। वेतन संरचना में परिवर्तन, जैसे बोनस में कटौती और ओवरटाइम अवसरों में कमी, ने आय अस्थिरता को और बढ़ाया। लेख नीति निर्माताओं से श्रमिकों के लिए पुनः कौशल विकास कार्यक्रमों की सिफारिश करता है, पटेल, एस., शर्मा, आर., और कुमार, वी. (2023).यह अध्ययन दक्षिण एशिया, विशेष रूप से भारत, में औद्योगिक श्रमिकों की वेतन गतिशीलता पर कोविड–19 के प्रभावों की जांच करता है। शोधकर्ताओं ने पाया कि महामारी के बाद मुद्रास्फीति और बढ़ती जीवन लागत ने वास्तविक वेतन (inflation & adjusted income) को 15–20% तक कम कर दिया। औद्योगिक क्षेत्र में, विशेष रूप से कपड़ा और ऑटोमोबाइल उद्योगों में, श्रमिकों ने अनियमित भुगतान और कम वेतन वृद्धि की शिकायत की। अध्ययन में लिंग आधारित असमानताओं पर भी प्रकाश डाला गया, जिसमें महिलाएँ पुरुषों की तुलना में अधिक आय हानि का सामना कर रही थीं। यह शोध आय स्थिरता के लिए सामाजिक सुरक्षा नेटवर्क की आवश्यकता पर जोर देता है. मिश्रा, पी. (2022). मिश्रा का यह अध्ययन हिंदी में प्रकाशित है और भारत में औद्योगिक श्रमिकों की आर्थिक स्थिति पर कोविड–19 के समाजशास्त्रीय प्रभावों की पड़ताल करता है। शोध में पाया गया कि लॉकडाउन ने न केवल आय में कमी की, बल्कि श्रमिकों के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कल्याण को भी प्रभावित किया। लगभग 50% श्रमिकों ने बताया कि अनियमित वेतन भुगतान ने उनके परिवारों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता को कम कर दिया। अध्ययन में यह भी उल्लेख किया गया कि ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन करने वाले श्रमिकों को शहरी औद्योगिक क्षेत्रों में सबसे अधिक आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। लेख सरकार से श्रमिक कल्याण योजनाओं को मजबूत करने की सिफारिश करता है। राव, के.एस. (2021). महामारी और औद्योगिक श्रम बाजाररू भारत में आय असमानता यह अध्ययन भारत के औद्योगिक श्रम

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

बाजार में कोविड–19 के कारण उत्पन्न आय असमानता पर केंद्रित है। शोध में पाया गया कि महामारी ने औद्योगिक श्रमिकों के बीच आय वितरण को और अधिक असमान बना दिया, जिसमें उच्च कुशल श्रमिकोंको कम नुकसान हुआ,जबकि कम कुशल और अनौपचारिक श्रमिकों ने आय में 40% तक की कमी का सामना किया। अध्ययन में वेतन संरचना में परिवर्तन,जैसे अस्थायी अनुबंधों की वृद्धि और नियमित रोजगार में कमी, को भी रेखांकित किया गया। लेख नीति निर्माताओं से श्रम सुधारों और वेतन सब्सिडी की सिफारिश करता है।

शोध उद्देश्य

- **यह अध्ययन करना कि COVID–19 के बाद औद्योगिक श्रमिकों की आय में कोई परिवर्तन हुआ या नहीं।**
- **महामारी के दौरान वेतन संरचना में आए बदलावों का विश्लेषण करना।नियमित आय प्राप्ति की स्थिति की जांच करना।**
- **पुरुष एवं महिला श्रमिकों के उत्तरों की तुलनात्मक समीक्षा करना।**

शोध डिजाइन

अनुसंधान प्रकार: वर्णनात्मक एवं मात्रात्मक

नमूना आकार: 600 औद्योगिक श्रमिक (447 पुरुष, 153 महिला, झाँसी क्षेत्र)

डेटा संग्रहण तकनीक: प्राथमिक डेटा (साक्षात्कार और प्रश्नावली)

डेटा विश्लेषण उपकरण: काई–स्क्वायर परीक्षण

परिकल्पना

- शून्य परिकल्पना: COVID–19 के बाद औद्योगिक श्रमिकों की आय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- वैकल्पिक परिकल्पना: COVID–19 के बाद औद्योगिक श्रमिकों की आय में सार्थक अंतर है।

क्रॉसटैब (प्रतिशत में)

प्रश्न A: COVID–**19** के बाद मेरी आय में कोई विशेष कमी नहीं हुई है।

Table- 1(1)

			Crosstab					Total
			Strongly Agree	Agree	Uncertain	Disagree	Strongly Disagree	
G	M	Count	75 (16.79%)	159 (35.57%)	139 (31.10%)	59 (13.19%)	15 (3.35%)	**447 (100%)**
		Expected Count	68.5	149.0	149.0	65.6	14.9	**447.0**
	F	Count	17 (11.11%)	41 (26.80%)	61 (39.87%)	29 (18.96%)	5 (3.26%)	**153 (100%)**
		Expected Count	23.5	51.0	51.0	22.4	5.1	**153.0**

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

Total	**Count**	**92 (15.33%)**	**200 (33.33%)**	**200 (33.33%)**	**88 (14.67%)**	**20 (3.33%)**	**600 (100%)**
	Expected Count	**92.0**	**200.0**	**200.0**	**88.0**	**20.0**	**600.0**

विश्लेषण एवं व्याख्या– सांख्यिकीय विश्लेषण के काई–वर्ग परीक्षण के परिणामस्वरूप महामारी के बाद वेतन वृद्धि को लेकर पुरूषों और महिलाओं के उत्तरों में महत्त्वपूर्ण सांख्यिकीय अन्तर पाया गया। पुरूषों में 16.8 प्रतिशत और महिलाओं में 11.1 प्रतिशत ने इस कथन से पूरी तरह से सहमति जतायी, 35.6 प्रतिशत पुरूषों और 26.8 प्रतिशत महिलाओं ने सहमति व्यक्त की। वहीं 31.1 प्रतिशत पुरूषों और 39.9 प्रतिशत महिलायें तटस्थ रही। कुल मिलाकर, 33.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन से सहमति व्यक्त की।

Table-1(2)

Chi-Square Tests			
	Value	**df**	**Asymptotic Significance (2-sided)**
Pearson Chi-Square	10.228[a]	4	.037
Likelihood Ratio	10.286	4	.036
Linear-by-Linear Association	7.188	1	.007
N of Valid Cases	600		

विश्लेषण एवं व्याख्या– सांख्यिकीय विश्लेषण के काई–वर्ग परीक्षण के परिणामस्वरूप मुक्तांश 4 पर काई–वर्ग मूल्य 10.228 एवं 0.05 के सार्थकता स्तर पर .037 है जो कि 0.05 से कम है।

प्रश्न B: COVID–**19** महामारी के बाद मेरी वेतन संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं।

Table-1(3)

Crosstab								
			Change in Salary Strucher					**Total**
			Strongly Agree	Agree	Uncertain	Disagree	Strongly Disagree	
G	M	Count	41 (9.17%)	170 **(**38.03%**)**	89 **(**19.91%)	116 **(**25.95%**)**	31 **(**6.94%**)**	**447 (100%)**
		Expected Count	53.6	169.9	89.4	105.0	29.1	**447.0**
	F	Count	31 (20.26%)	58 **(**37.91%**)**	31 **(**20.26%**)**	25 **(**16.34%**)**	8 **(**5.23%**)**	**153 (100%)**
		Expected Count	18.4	58.1	30.6	36.0	9.9	**153.0**

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

Total	**Count**	**72 (12%)**	**228 (38.00%**	**120 (20.00%)**	**141 (23.50%)**	**39 (6.50%)**	**600 (100%)**
	Expected Count	**72.0**	**228.0**	**120.0**	**141.0**	**39.0**	**600.0**

विश्लेषण एवं व्याख्या– सांख्यिकीय विश्लेषण के काई–वर्ग परीक्षण के परिणामस्वरूप महामारी के बाद वेतन वृद्धि को लेकर पुरूषों और महिलाओं के उत्तरों में महत्त्वपूर्ण सांख्यिकीय अन्तर पाया गया। पुरूषों में 9.2 प्रतिशत और महिलाओं में 20.3 प्रतिशत ने इस कथन से पूरी तरह से सहमति जतायी, 38 प्रतिशत पुरूषों और 37.9 प्रतिशत महिलाओं ने सहमति व्यक्त की। कुल मिलाकर, 50 प्रतिशत अधिक उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि उनकी वेतन संरचना में बदलाव हुआ।

Table- 1(4)

Chi-Square Tests			
	Value	**df**	**Asymptotic Significance (2-sided)**
Pearson Chi-Square	16.679[a]	4	.002
Likelihood Ratio	15.829	4	.003
Linear-by-Linear Association	10.855	1	<.001
N of Valid Cases	600		

विश्लेषण एवं व्याख्या– सांख्यिकीय विश्लेषण के काई–वर्ग परीक्षण के परिणामस्वरूप मुक्तांश 4 पर काई–वर्ग मूल्य 16.679 एवं 0.05 के सार्थकता स्तर पर .002 है जो कि 0.05 से कम ज्ञात है।
प्रश्न C: COVID–**19** के बाद मुझे मेरी आय नियमित रूप से प्राप्त हो रही है।

Table - 1(5)

Crosstab								
			Reciving of Salary Regularly					**Total**
			Strongly Agree	Agree	Uncertain	Disagree	Strongly Disagree	
G	M	Count	30 (6.71%)	139 (31.09%)	163 (36.47%)	97 (21.71%)	18 (4.03%)	**447 (100%)**
		Expected Count	30.5	151.2	149.7	93.9	21.6	**447.0**
	F	Count	11 (7.19%)	64 (41.83%)	38 (24.84%)	29 (18.95%)	11 (7.19%)	**153 (100%)**

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

		Expected Count	10.5	51.8	51.3	32.1	7.4	**153.0**
Total		**Count**	**41 (6.83%)**	**203 (33.83%)**	**201 (33.50%)**	**126 (21%)**	**29 (4.83%)**	**600 (100%)**
		Expected Count	**41.0**	**203.0**	**201.0**	**126.0**	**29.0**	**600.0**

विश्लेषण एवं व्याख्या– सांख्यिकीय विश्लेषण के काई–वर्ग परीक्षण के परिणामस्वरूप महामारी के बाद वेतन की नियमित को लेकर पुरूषों और महिलाओं के उत्तरों में महत्त्वपूर्ण सांख्यिकीय अन्तर पाया गया। पुरूषों में 6.7 प्रतिशत और महिलाओं में 7.2 प्रतिशत ने इस कथन से पूरी तरह से सहमति जतायी, जबकि 31.1 प्रतिशत पुरूषों और 41.8 प्रतिशत महिलाओं ने सहमति व्यक्त की। महिला एवं पुरूषों की तटस्थ प्रतिशत क्रमशः 24.8 एवं 36.5 प्रतिशत ज्ञात हुआ। कुल मिलाकर सम्पूर्ण विश्लेषण में 33.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि उन्हें वेतन की प्राप्ति नियमित हो रही है

Table - 1(6)

Chi-Square Tests			
	Value	**df**	**Asymptotic Significance (2-sided)**
Pearson Chi-Square	11.289[a]	4	.023
Likelihood Ratio	11.234	4	.024
Linear-by-Linear Association	.759	1	.384
N of Valid Cases	600		

विश्लेषण एवं व्याख्या– सांख्यिकीय विश्लेषण के काई–वर्ग परीक्षण के परिणामस्वरूप मुक्तांश 4 पर काई–वर्ग मूल्य 11.289 एवं 0.05 के सार्थकता स्तर पर सार्थकता .023 है जो कि 0.05 से कम प्राप्त है। ।

Chai&Square परीक्षण के अनुसार

प्रश्न	χ^2	df	p–मूल्य	**निष्कर्ष**
A	10.228	4	0.037	शून्य परिकल्पना अस्वीकृत
B	16.679	4	0.002	शून्य परिकल्पना अस्वीकृत
C	11.289	4	0.023	शून्य परिकल्पना अस्वीकृत

निष्कष – इस शोध से यह स्पष्ट हुआ है कि COVID–19 महामारी ने झाँसी क्षेत्र के औद्योगिक श्रमिकों की आय, वेतन संरचना तथा नियमित आय प्राप्ति की स्थिति पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण प्रभाव डाला

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

है। काई–स्क्वायर परीक्षण के सभी परिणामों से यह सिद्ध हुआ कि शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जा सकती है, अर्थात महामारी के उपरांत औद्योगिक श्रमिकों की आर्थिक स्थिति में वास्तविक व महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। विश्लेषण से यह भी ज्ञात हुआ कि पुरुष एवं महिला श्रमिकों के अनुभवों में कुछ स्पष्ट भिन्नताएँ थीं, विशेषतः वेतन संरचना में परिवर्तन और नियमितता की दृष्टि से। पुरुषों ने जहाँ अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक प्रतिक्रिया दी, वहीं महिलाओं ने अधिक नकारात्मक प्रभाव की पुष्टि की। यह अंतर स्पष्ट करता है कि भविष्य की नीति–निर्माण प्रक्रिया में लैंगिक संवेदनशीलता को सम्मिलित किया जाना चाहिए। महामारी ने असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को रोजगार की दृष्टि से अत्यधिक असुरक्षित बना दिया,श्रमिकों की आजीविका पर गहरा आघात हुआ। वेतन असमानता, आय की अनियमितता, और मानसिक तनाव जैसे कारक श्रमिकों की समग्र जीवन गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले मुख्य घटक बनकर उभरे हैं। यह शोध औद्योगिक क्षेत्र के नीति निर्माताओं, समाजशास्त्रियों, और आर्थिक नियोजकों के लिए उपयोगी साक्ष्य प्रस्तुत करता है, जिससे वे भविष्य में ऐसी आपदाओं की स्थिति में प्रभावी हस्तक्षेप और समर्थन तंत्र विकसित कर सकें। यह अध्ययन केवल झाँसी क्षेत्र तक सीमित है, जिससे इसके निष्कर्षों को अन्य क्षेत्रों पर सामान्यीकृत करना कठिन हो सकता है।अध्ययन केवल तीन प्रश्नों पर आधारित था, जिससे COVID–19 के समग्र प्रभावों का सीमित दृष्टिकोण प्राप्त हुआ।भविष्य के अध्ययन में श्रमिकों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभावों का विश्लेषण भी शामिल किया जाना चाहिए।

सुझाव: भविष्य में शोध को अधिक व्यापक क्षेत्रीय दायरे में विस्तारित किया जाना चाहिए ताकि अधिक सटीक निष्कर्ष निकाले जा सकें।नमूना आकार को बढ़ाकर अधिक विविधता वाले श्रमिक समूहों को शामिल करना चाहिए, जैसे विभिन्न आयु वर्ग, अनुभव स्तर और उद्योग क्षेत्रों से डेटा संग्रहण के लिए मिश्रित विधियों (जैसे फोकस ग्रुप, केस स्टडी आदि) का प्रयोग कर गहराई से जानकारी प्राप्त की जा सकती है।नीति निर्माताओं को इस शोध के निष्कर्षों के आधार पर श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाओं को मजबूत करने और संकट की स्थिति में समर्थन तंत्र विकसित करने चाहिए।

संदर्भ सूची–

1. गुप्ता, आर., और किशोर, ए. (2021). भारत में अनौपचारिक श्रमिकों पर कोविड–19 के आर्थिक प्रभाव पत्रिका: इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली ISSN 0012–9976

2. सेंगुप्ता, ए. (2023). कोविड–19 और शहरी भारत में रोजगार और आय: औद्योगिक श्रमिकों पर प्रभाव पत्रिका: इंडियन जर्नल ऑफ लेबर इकोनॉमिक्स ISSN: 0971–7927

3. पटेल, एस., शर्मा, आर., और कुमार, वी. (2023). दक्षिण एशिया में कोविड के बाद वेतन गतिशीलता पत्रिका: एशियन इकोनॉमिक रिव्यू ISSN 0004–4555

4. मिश्रा, पी. (2022). कोविड–19 और भारत में श्रमिकों की आर्थिक स्थितिरू एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण पत्रिका: समाजशास्त्र (Samajshastra) ISSN: 0976–6251

5. राव, के.एस. (2021). महामारी और औद्योगिक श्रम बाजार: भारत में आय असमानता पत्रिकारू जनन्याय (Jananyay) ISSN 0976–8394